15

ईसीसीई केन्द्र की रूपरेखा (प्रोफाइल)

तीन वर्ष की गीता पहली बार प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) केन्द्र में प्रवेश करती है। वह चारों ओर देखती है तथा रंगों, बनावट, सुव्यवस्थित स्थान, खिलौने तथा शिक्षकों की ओर आकर्षित होती है। उसे केन्द्र रूचिकर लगता है और उसे वहाँ समय बिताकर अच्छा लगता है। अगले तीन घंटों के लिए वह वहाँ खेलती है तथा कहानियाँ सुनती है। वह वहाँ पढ़ती है, नई चीजें सीखती है तथा रंगों के साथ कार्य करती है। वह अपने नई मित्रों के साथ खाना खाती है। दिन के अंत में वह खुश होकर घर आती है तथा अगले दिन फिर से स्कूल जाने के लिए उत्साहित है।

ईसीसीई केन्द्र के किन गुणों ने दिन के अंत में गीता को प्रसन्नता का अनुभव कराया?

एक ईसीसीई केन्द्र तीन से आठ वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए सीखने का आनंददायी स्थान होना चाहिए। छोटे बच्चे जिस परिवेश में रहते हैं, उसे समझने का प्रयास करते हैं। वे अपने परिवेश में दृश्यों तथा ठोस वस्तुओं को अर्थपूर्णता हेतु संगठित करते हैं। ऐसा होने के लिए बच्चों को एक ऐसे सुरक्षित एवं अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है जहाँ उन्हें परिवेश में खोजबीन करने के लिए प्रेरित किया जाए तथा खोजबीन हेतु पुरस्कृत किया जाए। उन्हें ऐसे वातावरण की आवश्यकता है जो संवेदी उद्दीपनों हेतु समृद्ध हो तथा उनकी कल्पनाशीलता तथा सृजनात्मकता के उपयोग के अवसर प्रदान करता हो।

इस पाठ में हम जानेंगे कि कौन से तत्व एक ईसीसीई केन्द्र को आकर्षक, उद्दीपक तथा भागीदार बनकर सीखने का स्थान बनाते हैं। यह पाठ चार खंडों में बांटा गया है। पहला खंड स्थान प्रबंधन से हेतु स्थान की पहचान से संबंधित है। दूसरा खंड ढांचागत सुविधाओं से संबंधित है। तीसरा खंड ईसीसीई कर्मचारियों की नियुक्ति, ईसीसीई स्टॉफ के प्रकार एवं उनकी नियुक्ति, पर्यवेक्षण एवं निगरानी से संबंधित है। चौथा खंड आर्थिक संसाधनों के उपयोग एवं उनकी गतिशीलता से संबंधित है।

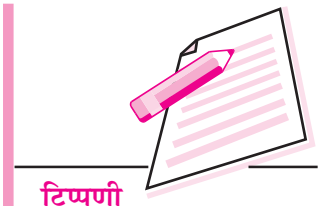

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- ईसीसीई केन्द्र की आवश्यक विशेषताओं का वर्णन करते हैं;
- ईसीसीई केन्द्रों के स्थान संबंधी मुद्दों पर चर्चा करते हैं;
- ईसीसीई केन्द्र की स्थापना करने हेतु ध्यान में रखे जाने वाले संसाधनों/भौतिक सुविधाओं की सूची तैयार करते हैं;
- ईसीसीई केन्द्र पर आवश्यक शिक्षण अधिगम सामग्री तथा अन्त: एवं बाह्य दोनों प्रकार के खेलों के लिए आवश्यक सामग्री की सूची तैयार करते हैं;
- बाह्य एवं आन्तरिक स्थान तथा संसाधनों के सार्थक उपयोग एवं रखरखाव के प्रभावी एवं कुशल तरीके बताते हैं;
- आपदा प्रबंधन तथा प्राथमिक उपचार में निपुणता से बच्चों की सुरक्षा एवं देखभाल सुनिश्चित करते हैं;
- केन्द्र के लिए उपयुक्त उपकरणों एवं सामग्री का चयन करते हैं;
- विविध गतिविधियों के लिए निर्धारित किये जाने वाले स्थान की योजना की रूपरेखा तैयार करते हैं; और
- विभिन्न ईसीसीई कर्मचारियों तथा भागीदारों की सूची तैयार करते हैं।

15.1 स्थान की पहचान

चूंकि प्रीस्कूल के बच्चों पर वातावरण का बहुत अधिक प्रभाव होता है इसीलिए ईसीसीई केन्द्र/प्रीस्कूल के लिए स्थान की पहचान करते समय आपको कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। केन्द्र का स्थान ऐसा होना चाहिए, जहाँ–

क) पहुँचना आसान हो।

ख) सफाई एवं स्वच्छता हो तथा प्रदूषण रहित वातावरण हो।

ग) सुरक्षा एवं बचाव हो।

घ) दिव्यांग बच्चों के लिए बाधा रहित वातावरण हो।

आइए, ईसीसीई केन्द्र की इन आवश्यक विशेषताओं के बारे में विस्तार से अध्ययन करें–

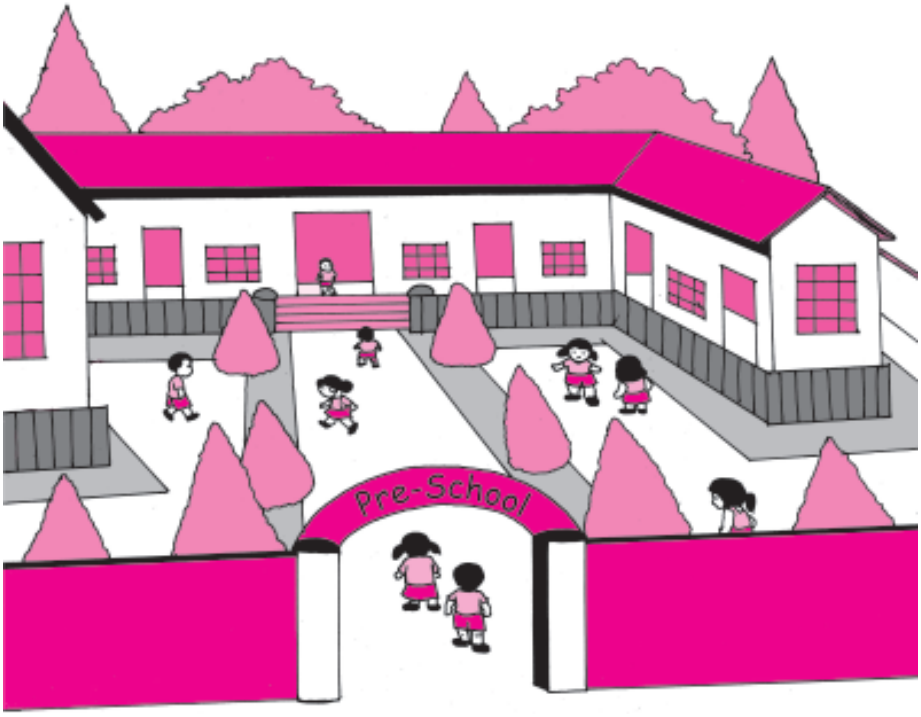

चित्र 15.1 : एक ईसीसीई केन्द्र/प्रीस्कूल

(a) आसान पहुँच

ईसीसीई केन्द्र की स्थिति किसी भी अभिभावक द्वारा ईसीसीई केन्द्र/प्रीस्कूल के चयन को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। बच्चों को केन्द्र तक सामान्यत: उनकी माँ या भाई-बहन ही छोड़ते हैं। अभिभावक अपने घर या कार्यस्थल के समीप ही स्कूल का चयन करते हैं ताकि बच्चों को प्रतिदिन स्कूल छोड़ने तथा स्कूल से लेना सुविधाजनक हो। किसी ईसीसीई केन्द्र की सबसे बेहतर स्थिति वह होती है जब केन्द्र किसी अन्य स्कूल के साथ या किसी पार्क के पास या समुदाय के केन्द्र में स्थित हो।

(b) साफ-सफाई, स्वच्छता तथा प्रदूषण मुक्त वातावरण

छोटे बच्चों की देखभाल करते समय स्वच्छता तथा साफ-सफाई मूलभूत मुद्दे हैं। साफ-सफाई तथा स्वच्छता में उच्च मानक बच्चों के सीखने के लिए एक स्वागत योग्य एवं सुरक्षित वातावरण बनाते हैं। छोटे बच्चों में संक्रमण का कारण बन सकते हैं। इसलिए ईसीसीई केन्द्र पर सदैव संक्रमण का ज्यादा जोखिम होता है। गंदे कमरे तथा अहाता, त्वचा रोग एवं कृमि संक्रमण का कारण बन सकते हैं। इसलिए ईसीसीई केन्द्र का स्थान सदैव संक्रमण के स्रोतों, जैसे– रूके हुए पानी के तालाब, कूढ़े के ढ़ेर, खुले नाले इत्यादि से दूर होना चाहिए। फर्श तथा शौचालयों को प्रतिदिन कीटाणुनाशक से साफ किया जाना चाहिए। भवन मानक गुणवत्ता निर्माण के तरीकों तथा सामग्री से बना होना चाहिए। यह भवन के अन्दर की हवा की गुणवत्ता की वृद्धि में सहायता करेगा।

ध्वनि प्रदूषण बच्चों में एकाग्रता की कमी तथा सिरदर्द का कारण बन सकता है। इसे ध्वनि,

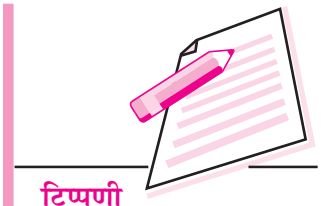

टिप्पणी

अवशोषक सामग्री जैसे छत के बोर्ड, रबर के फर्श तथा मजबूत दरवाजे इत्यादि द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए। गर्मी, प्रकाश तथा उचित वायु संचार बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है।

पर्याप्त प्रकाश तथा वायु संचार की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए किसी ईसीसीई केन्द्र को सुनियोजित वायु संचार की आवश्यकता है। यदि संभव हो तो मक्खियों, मच्छरों तथा अन्य कीड़ों के प्रवेश को रोकने के लिए सभी खिड़कियों पर तार की जाली लगवाएं।

(c) सुरक्षा एवं बचाव

बच्चे अपने आस-पास पर्यावरणीय खबरों से बचाव के लिए कम तैयार होते हैं। बच्चे मोटर वाहनों से संबंधित दुर्घटनाओं, आग एवं जलने, डूबने, गिरने तथा नहर इत्यादि से संबंधित दुर्घटनाओं के लिए अति संवेदनशील होते हैं। पर्यावरण में बच्चों की सुरक्षा एवं बचाव संबंधी आवश्यकताओं के लिए ईसीसीई केन्द्र की योजना व्यवस्था तथा स्थापना के सभी चरणों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। सुरक्षित वातावरण में बच्चे स्वतंत्र रूप से घूम सकते हैं तथा बिना किसी की निगरानी के ज्यादा खोजबीन कर सकते हैं।

एक सुरक्षित वातावरण में शामिल होता है–

- गैर-विषैले पदार्थों से बने विकास के लिए उपयुक्त उपकरण;
- फिसलन रहित फर्श;
- स्थिर अलमारियाँ, वस्तुएं तथा गोलाकार कोनों की सहायता से जुड़े उपकरण;
- गोलाकार कोनों वाली दीवारें; और
- सुरक्षित बिजली फिटिंग तथा प्लग प्वाइंटस।

(d) दिव्यांग बच्चों के लिए बाधा रहित वातावरण

गुणवत्तायुक्त ईसीसीई केन्द्र दिव्यांग बच्चों का स्वागत करता है। सभी बच्चों के लिए केन्द्र में पहुँच सुलभ बनाने के लिए केन्द्र की स्थिति तथा बुनियादी ढाँचा दिव्यांगों की आवश्यकतानुरूप होना चाहिए। इसमें जहाँ आवश्यक हो वहाँ रैम्प, चौड़े दरवाजे, रेलिंग से सुसज्जित शौचालय, लचीले फर्नीचर, केन्द्र के बाहर जाने तथा अंदर आने के योजनाबद्ध तरीके से तैयार किये गये रास्ते होने चाहिए।

खराब बुनियादी ढाँचा, दिव्याँग बच्चों के लिए फर्नीचर की अनुपलब्धता, विशेष सहायक उपकरणों की खराब गुणवत्ता इत्यादि एक समावेशी ईसीसीई केन्द्र की प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

पाठगत प्रश्न 15.1

खाली स्थान भरिए–

(a) ..... तथा ..... जैसे प्रावधान करके ईसीसीई केन्द्र को दिव्यांग बच्चों के लिए सुलभ बनाया जा सकता है।

टिप्पणी

(b) गन्दे तथा अस्वच्छ कमरे बच्चों में ..... तथा ..... पैदा कर सकते हैं।

(c) ..... तथा ..... कुछ संक्रमण के स्रोत हैं।

(d) ईसीसीई केन्द्र पर बच्चों की सुरक्षा के लिए फर्श ..... होना चाहिए।

(e) गर्मी, प्रकाश तथा समुचित ..... बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

15.2 बुनियादी ढ़ाँचा/भौतिक सुविधाएँ

ईसीसीई केन्द्र पर भौतिक सुविधाओं में आन्तरिक तथा बाह्य दोनों ही तरह की सुविधाएं शामिल होती हैं। इस खंड में आन्तरिक तथा बाह्य भौतिक सुविधाओं के साथ-साथ हम ईसीसीई केन्द्र पर पानी तथा शौचालय संबंधी सुविधाओं के महत्व पर भी चर्चा करेंगे।

15.2.1 बाह्य सुविधाएँ

बाह्य खेल बच्चों की स्वाभाविक गतिविधियों का एक अभिन्न अंग है। पर्याप्त स्थान, खोजबीन करने के अवसर, कल्पनाशीलता तथा सृजनात्मकता का उपयोग इत्यादि सभी ऐसे तत्व हैं जो बाहरी स्थान को सीखने के वातावरण के अनुकूल बनाते हैं। इसके अतिरिक्त यह बच्चों को सुरक्षा एवं बचाव के मानकों के अन्तर्गत बच्चों को जोखिम उठाने की अनुमति देता है। इसलिए, उपलब्ध बाह्य स्थान का अधिकतम उपयोग करना तथा सुरक्षा एवं बचाव के लिए उसे ठीक बनाए रखना बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है। बाह्य सुविधाओं में खेल का मैदान, रेत के गढ्ढे, घास से ढ़का क्षेत्र इत्यादि शामिल हैं।

(a) खेल के मैदान : सभी खेल के मैदानों में तीन प्रकार के क्षेत्र शामिल होने चाहिए, जिन्हें आमतौर पर खुले, शांत तथा सक्रिय क्षेत्र के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

- दौड़ने एवं खेलने के लिए खुले क्षेत्र में पक्का पथ (साइकिल चलाने के लिए), खेल का मैदान लॉन तथा शेड शामिल होते हैं। यदि हमारे पास केन्द्र में पर्याप्त स्थान नहीं है तो शिक्षक बच्चों को घास के पार्क या अन्य खुली जगह जहाँ भी संभव हो ले जा सकते हैं।
- वहाँ शांत क्षेत्र भी होने चाहिए जैसे- कम वनस्पति तथा पेड़, भूनिर्माण, वनस्पति उद्यान, रेत इत्यादि वाले क्षेत्र।
- बच्चों में संपूर्ण गतिक विकास के लिए सक्रिय क्षेत्र होना आवश्यक है। सक्रिय क्षेत्र में झूले, सी-सॉ, जंगल जिम, फिसल पट्टी, रस्सी वाली सीढ़ियाँ शामिल होती हैं। कम लागत/बेकार वस्तुओं जैसे टायर जैसी वस्तुओं का उपयोग झूले बनाने के लिए किया जा सकता है। खेलने के लिए घास से ढके हुए छोटे क्षेत्र की सुविधा बच्चों के स्वास्थ्य को बेहतर कर सकती है।

(b) रेत के गढ्ढे : रेत के गढ्ढों को आमतौर पर बाह्य गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। इसका आकार एक बार में उपयोग करने वाले बच्चों की संख्या के लिए पर्याप्त होना चाहिए। रेत को धोकर साफ करके समुचित गहराई तक भरना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 15.2

बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य हैं या असत्य–

(a) एक ईसीसीई केन्द्र बच्चों के स्वागत योग्य होना चाहिए।

(b) यदि हमारे पास खेल का मैदान नहीं है तो हमें दौड़, कूद तथा झूलने की गतिविधियों का आयोजन नहीं करना चाहिए।

(c) रेत के गढ्ढों में रेत धोकर साफ करके उचित गहराई तक भरना चाहिए।

(d) हम बाह्य खेलों के लिए कम लागत वाली स्थानीय रूप से उपलब्ध खेल सामग्री उपयोग कर सकते हैं।

(e) सभी समावेशी केन्द्रों को दिव्यांगों के अनुकूल बुनियादी ढ़ाँचा सुनिश्चित करना चाहिए।

15.2.2 आन्तरिक सुविधाएँ

बच्चों की शिक्षा और विकास में समुचित रूप से व्यवस्थित आन्तरिक स्थान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे बच्चों को चुनौती और उद्दीपन प्रदान करना चाहिए और बच्चों की कल्पनाशीलता तथा सृजनात्मकता को बढ़ावा देना चाहिए। उसी समय इसे सीखने में स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करनी चाहिए।

चित्र 15.2 : आन्तरिक सुविधाएँ

ईसीसीई केन्द्र में आन्तरिक सुविधाओं में अच्छी रोशनी वाले हवादार कमरे, भंडारण का स्थान, सुरक्षित फर्श कवरिंग आदि शामिल हैं।

(a) **आकार :** आन्तरिक स्थान वांछित संख्या में बच्चों को समायोजित करने के लिए पर्याप्त बड़ा होना चाहिए। यदि आन्तरिक बच्चों को समायोजित करने में अपर्याप्त है तो हमें बच्चों को समूह में बाँट लेना चाहिए। इन समूहों में से कुछ समूहों को आन्तरिक खेल में तथा कुछ समूहों को बाह्य खेल में शामिल किया जा सकता है।

(b) **रोशनी एवं हवादार कमरे :** पर्याप्त रोशनी तथा हवादार कमरे आंतरिक वातावरण को आरामदायक बनाये रखने में सहायक होते हैं और बच्चों के सीखने में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। यह कम ऊँचाई वाली खिड़कियों, बिजली के पंखों तथा हवा बाहर फेंकने वाले पंखों आदि की सुविधा प्रदान करके ही संभव किया जा सकता है।

(c) **प्रकाश:** प्रकाश की गुणवत्ता एवं मात्रा बच्चों के शिक्षकों और बच्चों के स्वभाव तथा इच्छाओं को प्रभावित करती है। इसे लाइटशेड, खिडकियों और वेंटिलेटर का उचित स्थान के माध्यम से बढ़ावा दिया जा सकता है। पर्याप्त प्राकृतिक प्रकाश के अभाव में ट्यूबलाइट का प्रयोग करना चाहिए। हालांकि प्राकृतिक रोशनी को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

(d) **भंडारण स्थान :** किसी ईसीसीई केन्द्र में खिलौने, ब्लॉक्स, किताबें, थैले, शिक्षण सामग्री, उपकरण, संगीत उपकरण इत्यादि के भंडारण हेतु पर्याप्त स्थान होना चाहिए। इसलिए आन्तरिक सुविधाओं में बड़ी तथा गहरी अलमारियाँ, जो बच्चों की पहुँच में हों, होनी चाहिए ताकि बच्चे जब चाहें तब उनका उपयोग कर सकें।

(e) **फर्श ढकना:** यदि संभव हो तो बच्चों की सुरक्षा के लिए फर्श चढ़ाई या गद्दों इत्यादि से ढके होने चाहिए। आरामदायी बनाने के लिए प्राकृतिक सामग्री के उपयोग करना चाहिए। सतह के लिए ऐसी सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए जिसे आसानी से साफ किया जा सके तथा जिसका रखरखाव आसान हो।

चित्र 15.3 : आसान पहुँच-किताबों की अलमारी

चित्र 15.4 : आसान पहुँच-खेल सामग्री का भंडारण

(f) **दीवारें और छत:** दीवारें ईंटों, मिट्टी, पत्थर या सीमेंट की बनी हो सकती हैं परन्तु वे सुरक्षित, मजबूत तथा टिकाऊ होनी चाहिए। छत, सीमेंट, बाँस या केले के पत्तों या अन्य

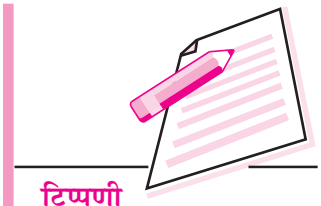

टिप्पणी

किसी भी स्थानीय सामग्री की बनी हो सकती है परन्तु ये मजबूत और सुरक्षित होनी चाहिए।

(g) **जल सुविधा :** बहुत से केन्द्रों पर अब भी सुरक्षित पेय जल की सुविधा उपलब्ध नहीं है जिसके चलते बच्चों में कई जल जनित संक्रामक रोगों के पैदा होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए किसी ईसीसीई केन्द्र/प्रीस्कूल में सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता एक बुनियादी आवश्यकता है।

(h) **शौचालय सुविधा:** बहुत से अभिभावक अपनी बच्चियों को स्कूल इसलिए नहीं भेजते हैं क्योंकि स्कूल में लड़कियों के लिए अलग से शौचालय नहीं है। केन्द्र पर लड़कों तथा लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय होने चाहिए। बच्चों के शौचालय उनके आयु वर्ग के अनुरूप उचित आकार तथा ऊँचाई के होने चाहिए। हाथ धोने के स्थान तथा साबुन इत्यादि इतनी ऊँचाई पर होने चाहिए जो बच्चों को आसान पहुँच में हों।

पाठगत प्रश्न 15.3

कॉलम 'अ' तथा कालम 'ब' का सही मिलान कीजिए–

कालम 'अ'	कालम 'ब'
(क) हवादार कमरे	(i) जल जनित बीमारियों से बचाता है।
(ख) प्रकाश	(ii) मजबूत तथा टिकाऊ होनी चाहिए।
(ग) छत तथा दीवारें	(iii) लड़के तथा लड़कियों के लिए अलग होने चाहिए।
(घ) शौचालय सुविधा	(iv) चौड़े तथा नीचे खिडकियों वाले होने चाहिए।
(च) सुरक्षित पेयजल	(v) अधिकतर प्राकृतिक रोशनी वाला हो।

15.2.3 ईसीसीई केन्द्र की सुरक्षा

आपदा प्रबंधन एवं प्राथमिक उपचार सुविधा, आपदा योजना या संकट प्रबंधन उन कारणों का अनुमान लगाने के संबंध में है। जिनकी वजह से दुर्घटनाएं हो सकती हैं तथा साथ ही साथ बच्चों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा उन्हें क्षति पहुँचते से बचाने के लिए है।

ईसीसीई केन्द्र स्थापित करने की योजना में आपातकालीन स्थितियों का प्रबंधन करने वाली प्रभावी प्रक्रियाओं का नक्शा शामिल होना चाहिए। ईसीसीई केन्द्रों को अग्निशामक यंत्र, रेत की बाल्टियाँ, प्राथमिक उपचार व्यवस्था इत्यादि से सुसज्जित किया जाना चाहिए।

आपदाओं के प्रबंधन के लिए कर्मचारियों, बच्चों, माता-पिता और स्थानीय समुदाय को शामिल करते हुए एक गतिशील, पूर्व नियोजित प्रक्रिया की आवश्यकता होती है। पहले से योजना बनाकर तथा अधिक से अधिक स्वास्थ्य और सुरक्षा चरों का अनुमान लगाकर, ईसीसीई केन्द्र यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपदा के दिन लिए गये निर्णय न केवल शीघ्र तथा प्रभावी

टिप्पणी

ढ़ंग से लिए जाते हैं अपितु वे समय से होने वाली सही तथा स्वचालित प्रक्रियाएं होंगी जिनके लिए आपदा हेतु पूर्व में समय लगाया गया है।

आपदा तथा आपातकाल से बचने के लिए देखभाल करने वालों, शिक्षकों तथा अन्य कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। बच्चों के लिए समुचित प्राथमिक उपचार बॉक्स तथा आपात स्थिति में चिकित्सा सहायता बुलाने की व्यवस्था होनी चाहिए।

15.3 उपकरण तथा अधिगम सामग्री

छोटे बच्चे सतत रूप से बढ़ते तथा सीखते हैं। वे अपनी कल्पनाशीलता से माचिस की डिब्बी को कार, टहनी को पेड़ या पत्थर के किसी टुकड़े को जानवर के रूप में बदल सकते हैं। उन्हें सीखने के लिए महंगे उपकरणों और खिलौनों की आवश्यकता नहीं है। उन सभी को विकास के उपयुक्त खेल साधनों तथा सीखने की सामग्री के साथ-साथ उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है। यह उन्हें स्वयं को तथा इस संसार को समझने में सहायता करता है जिसमें वे रहते हैं।

आइए, किसी ईसीसीई केन्द्र पर बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों तथा अधिगम सामग्री के बारे में और अधिक जानें।

15.3.1 उपकरणों एवं अधिगम सामग्री के प्रकार

केन्द्र पर साधनों/उपकरणों को मुख्य रूप से अन्दर खेले जाने वाले तथा बाहर खेले जाने वालों साधनों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(a) **आन्तरिक उपकरण एवं अधिगम सामग्री :** इसमें ब्लॉक्स खिलौने रूप में बर्तन तथा नाटक खेलने के लिए अन्य सामग्री होती है। इसमें पहेलियाँ, जोड़-तोड़कर बनाये जाने वाले खिलौने/खेल, कला गतिविधियों के लिए सामग्री भी शामिल हैं।

(b) **बाह्य उपकरण तथा अधिगम सामग्री :** इसमें ऊपर चढ़ने वाले उपकरण, फिसल पट्टियाँ, जंगल जिम, सी-सॉ, गेंद (विभिन्न आकार एवं बनावट वाली), खेल उपकरण (बच्चों के लिए उपयुक्त आकार का बास्केट बाल घेरा, प्लास्टिक का बैट, हॉकी), पहिये वाले खिलौने (गाडियाँ, खीचने/धक्का देने वाले खिलौने, स्कूटर), चलाये जाने वाले खिलौने (पैंडल् रहित और पैडल सहित विविध आकार के, एक या दो बच्चों द्वारा उपयोग में लिए जाने वाले), टम्बलिंग चटाई, कूदने वाली रस्सी, लकड़ी की टहनियाँ रेत के डिब्बे, रेत के गढ्ढे, मापन कप/चम्मच, विभिन्न प्रकार के बर्तन/पात्र, प्लास्टिक की बोतलें, तैरने तथा डूबने वाली वस्तुएँ, प्राकृतिक वस्तुएं जैसे सीप, लकड़ी के गुटखे, पत्थर इत्यादि होते हैं।

चित्र 15.5 : बाह्य खेल क्षेत्र

15.3.2 उपकरण एवं अधिगम सामग्री का चयन

खेल के माध्यम से ही बच्चे सीखते हैं। अत: खेल सामग्री उनकी अधिगम सामग्री भी है। केन्द्र के लिए उपयुक्त उपकरण तथा अधिगम सामग्री के चयन में उचित सोच-विचार आवश्यक है। प्राय:, खेल सामग्री के लिए आवंटित धनराशि सीमित होती है। इसलिए आवंटित धनराशि का उपयोग कैसे किया जाए, इस पर अच्छी तरह से योजना बनाने की जरूरत है।

ध्यान रखने योग्य कुछ बिन्दु निम्नलिखित हैं–

- क्या यह समय के साथ बच्चों की रुचि बनाए रखेगा?
- क्या यह आयु वर्ग के लिए उपयुक्त है?
- क्या इसे विभिन्न आयु वर्ग वाले बच्चों द्वारा विविध तरीकों से उपयोग में लाया जा सकता है?
- क्या यह विविध संस्कृतियों एवं परिवारों का प्रतिनिधित्व करता है?
- क्या इसे सभी योग्यताओं वाले बच्चों द्वारा उपयोग किया जा सकता है?
- क्या यह मजबूत, भलीभांति डिजाइन की गयी तथा टिकाऊ है?

- क्या यह सुरक्षित है?
- क्या यह वर्तमान सुरक्षा मानकों को पूरा करती है?
- क्या इसी स्वच्छता तथा रखरखाव आसान है?

आइए, कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा करते हैं–

- **आयु-उपयुक्तता:** सभी अधिगम सामग्री और उपकरण उन बच्चों के आयु वर्ग के लिए उपयुक्त होने चाहिए जिनकी भाषा, संज्ञानात्मक तथा सामाजिक संवेगात्मक विकास को बढ़ावा देने के लिए उनका चयन किया गया है।
- **एकाधिक उपयोग :** बच्चे रेत, पानी या आटे का उपयोग, उनकी क्षमता, सामग्री के साथ उनके पूर्व अनुभव तथा रुचि के आधार पर एक से अधिक तरीकों से कर सकते हैं। अत: जब भी अधिगम सामग्री तथा उपकरणों का चयन करें तो यह सुनिश्चित करें कि सामग्री का एकाधिक उपयोग संभव हो। उदाहरण के लिए - लकड़ी के गुटखों का उपयोग मेरी-गो-राऊन्ड के बाहर चारों ओर बैठने के लिए किया जा सकता है। साथ ही गुटखों या तख्तों को जोड़कर फिसल पट्टी के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
- **पर्याप्तता :** चूँकि पाठ्यक्रम में इनडोर/आऊटडोर, व्यक्तिगत/सामूहिक सभी प्रकार की गतिविधियाँ शामिल हैं, अत: पाठ्यक्रम में शामिल सभी गतिविधियों के सफल नियोजन हेतु अधिगम सामग्री तथा उपकरण, मात्रा तथा समानुपात के संदर्भ में पर्याप्त होने चाहिए।
- **विविधता :** यह आवश्यक है कि केन्द्र पर सभी बच्चों की आवश्यकताओं, क्षमताओं तथा उनकी रुचि के अनुरूप एक बड़ी रेंज तथा विविधता वाली अधिगम सामग्री तथा उपकरण होने चाहिए। ऐसी सामग्री जिनकी पुन: उपयोग तथा पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता है जैसे मिट्टी, गुटके, बटन, प्लास्टिक के बर्तन, खाली डिब्बे एक अच्छा विकल्प होते हैं।
- **सुरक्षा :** उपकरण, बच्चों के उपयोग हेतु उपयुक्त तथा सुरक्षित होने चाहिए। सभी उपकरण कम ऊँचाई वाले, हल्के तथा गोल किनारों वाले होने चाहिए। सामग्री में उपयोग किये गये रंग या पदार्थ इत्यादि गैर-विषैले तथा सभी सुरक्षा मानकों को पूरा करने वाले होने चाहिए।
- **विविधता तथा लचीलापन :** यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि ईसीसीई केन्द्र पर उपकरण उस समुदाय का प्रतिनिधित्व करता हो जहाँ केन्द्र स्थित है। सभी सामग्री तथा उपकरण इन विचारों के साथ चुने जाने चाहिए कि वे नस्ल, रंग, जाति, संस्कृति इत्यादि विविधताओं की स्वीकार्यता को बढ़ावा देंगे। सामग्री विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सीखने के लिए अनुकूल भी होनी चाहिए।

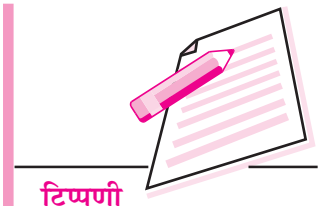

- **प्राकृतिक सामग्री :** ईसीसीई केन्द्र पर बड़ी मात्रा में प्राकृतिक सामग्री का उपयोग किया जा सकता है जैसे कंकड़, बीज तथा फलियाँ, रेत, पानी, पत्तियाँ तथा टहनियाँ या पौधे इत्यादि। इससे मंहगे उपकरण और खिलौने खरीदने से भी बचा जा सकेगा। उदाहरण के लिए– झूले, सीढ़ियाँ इत्यादि बनाने के सस्ती सामग्री जैसे रस्सी या उपयोग किया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 15.4

1. बताइए कि दिये गये कथन सत्य हैं या असत्य–
   (a) खाना परोसने के लिए पत्तलों का उपयोग नहीं किया जा सकता है।
   (b) मिट्टी, गुटखे, कंकड़ इत्यादि सामग्री का उपयोग खेल में विविधता को बढ़ाता है।
   (c) ईसीसीई केन्द्र के लिए अधिगम सामग्री तथा उपकरण का चयन करते समय सुरक्षा एवं टिकाऊपन महत्वपूर्ण बिंदु है।
   (d) बाहर खेले जाने वाले खेलों की सामग्री को दिव्यांग बच्चों की पहुँच को ध्यान में रखकर नहीं बनाया जा सकता है।
2. ईसीसीई केन्द्र पर कम लागत वाले बजट में उपकरण खरीदने के दो उदाहरण दीजिए।
3. दी गई सामग्री को इनडोर तथा आउटडोर अधिगम सामग्री तथा उपकरणों में वर्गीकृत कीजिए: रेत के गढ़ढे, झूले, फिट-इन पहेलियाँ, गुडियाँ, सवारी वाले खिलौने, कोलॉज सामग्री, जंगल जिम, जाइलोफोन, रेडिया और गुटखे।

15.3.3 सामग्री तथा उपकरणों का आवंटन

केन्द्र के लिए अधिगम सामग्री तथा उपकरण खरीदना ही सीखने के लिए आनंददायी वातावरण की सुनिश्चितता नहीं है। अधिगम सामग्री तथा उपकरण को बच्चों को खोजबीन के अवसर देने तथा उनमें फेरबदल करके सीखने के लिए उनका चयन किया जाता है तथा खरीदा जाता है। ये केवल प्रदर्शन, दिखावे या सजावट के लिए नहीं बनीं है। करके सीखने के लिए अधिगम सामग्री तथा उपकरण की व्यवस्था इस प्रकार की जाती है ताकि बच्चों की उन तक सीधी पहुँच हो। यह पहुँच सुनिश्चित करती है कि बच्चे उपलब्ध विकल्पों को देखें तथा उन तक पहुँचें।

इस खंड में हम ईसीसीई केन्द्र को एक रूचिकरण स्थान बनाने के लिए तथा व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों ही अनुभवों में वृद्धि करने के लिए उपकरणों एवं अधिगम सामग्री के उचित आवंटन के कुछ तरीकों पर चर्चा करेंगे।

- यदि केन्द्र बहुत बड़ा है तो इसे विविध गतिविधि क्षेत्रों में बाँटने का प्रयास करें जैसे- कला एवं शिल्प क्षेत्र, विज्ञान एवं गतिक क्षेत्र, ब्लॉक पहेली क्षेत्र संगीत एवं आवागमन क्षेत्र, खाना पकाने का क्षेत्र इत्यादि तथा फिर उन विशिष्ट क्षेत्रों के अनुसार सामग्री का चयन करें। नीची अलमारियों, ब्लैक बोर्ड या फर्नीचर की सीमाएं निर्धारित कीजिए।

चित्र 15.6 : ईसीसीई केन्द्रों की व्यवस्था

- भलीभांति साथ-साथ चलने वाली गतिविधियों के बारे में विचार करें। सक्रिय एवं शोरगुल वाली गतिविधियों को शांत एवं ध्यान केन्द्रित करने वाली गतिविधियों से अलग रखा जाना चाहिए। गीला होने वाली तथा गन्दा होने वाली गतिविधियों को किसी सिंक के आस-पास कराया जाना चाहिए। सभी सामग्री एक साथ किसी विशिष्ट स्थान पर समूहों में व्यवस्थित की जानी चाहिए ताकि बच्चे स्वतंत्र रूप से ढूंढ़ सके, खेल सके तथा वापिस रख सकें।
- सामग्री तथा उपकरण स्पष्ट रूप से दृश्य तथा पहुँच में हानी चाहिए। यह तभी संभव है जब सामग्री को कम ऊँचाई पर (जमीन से 3 फुट या उससे नीचे) तथा समुचित नाम (शब्दों तथा चित्र में) लिखकर रखा गया हो।
- स्पष्ट रूप से चिन्हित रास्ते तैयार करें ताकि किसी एक कमरे या क्षेत्र से दूसरे कमरे या क्षेत्र में आसानी से पहुँच सकें। सामग्री इस प्रकार से व्यवस्थित की गई हो कि यह एक गतिविधि से दूसरे गतिविधि करने में सहायक हो।
- सामग्री या उपकरण को इस प्रकार रखा जाए जिससे शिक्षक बच्चे की व्यक्तिगत रूप से निगरानी रख सके। कक्षा में पर्याप्त स्थान मुहैया कराना चाहिए ताकि कोई गतिक बाधित बच्चा भी व्हील चेयर को आसानी से चला सके तथा सामग्री तक आसानी से पहुँच सके।

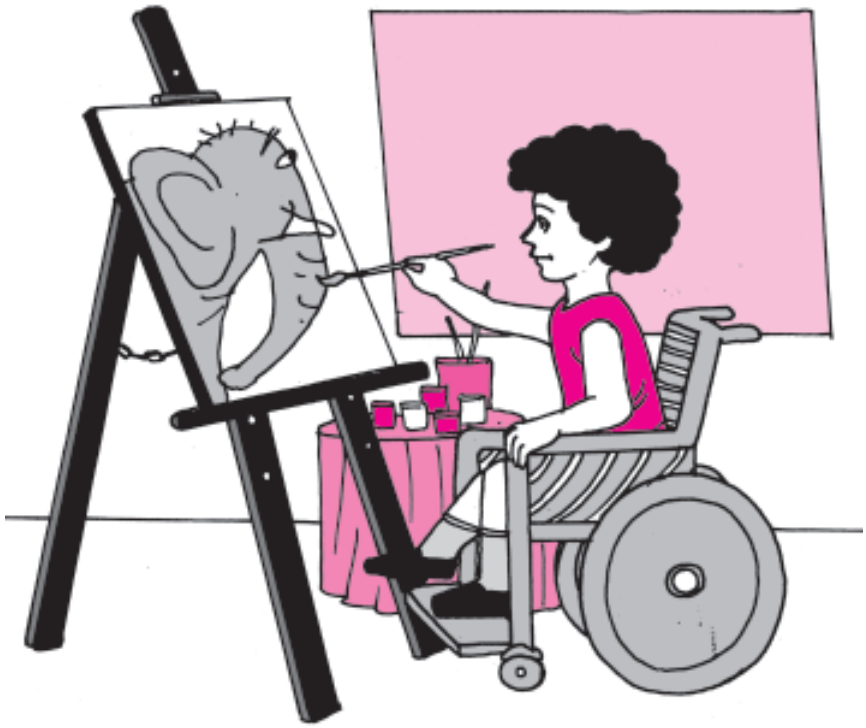

चित्र 15.7 : दिव्यांग बच्चों की आवश्यकता की पूर्ति

- बाह्य स्थान एकाधिक तरीकों, जैसे कला, नाट्य, खेल, रेत तथा पानी की गतिविधियाँ इत्यादि, से उपयोग किया जा सकता है। इसलिए, सामग्री तथा उपकरण उसी के अनुसार व्यवस्थित कर सकते हैं।
- समूह गतिविधियों के लिए बड़ा समतल स्थान उपलब्ध कराएँ।
- बच्चे की दृष्टि स्तर के अनुरूप आकर्षक रूप से बच्चों की कला को दीवारों पर प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 15.5

1. खाली स्थान भरिए–

   (a) अधिगम सामग्री की ..... एवं ..... बच्चों की अपनी पसंद देखने तथा उन तक पहुँचने की सुनिश्चितता के लिए आवश्यक है।

   (b) गतिविधि क्षेत्रों की सीमा तय करने के लिए ..... या ..... उपयोग की जा सकती हैं।

   (c) ..... तथा ..... ऐसे गतिविधि क्षेत्र हैं जिन्हें बाह्य स्थानों में व्यवस्थित किया जा सकता है।

   (d) अलमारियों पर नाम ..... तथा ..... के रूप में होने चाहिए ताकि सामग्री को आसानी से पहचाना जा सके।

टिप्पणी

15.3.4 स्थान प्रबंधन

ईसीसीई केन्द्र के संचालन हेतु स्थान प्रबंधन एक महत्वपूर्ण बिंदु है। केन्द्र के सुगम संचालन हेतु बेहतर योजना आवश्यक होती है। स्थान की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए ताकि सभी आवश्यक गतिविधियों हेतु पर्याप्त स्थान उपलब्ध हो। सभी गतिविधि क्षेत्र इस प्रकार से बनाये जाने चाहिए ताकि दूसरों को परेशान किये बिना एक गतिविधि क्षेत्र से दूसरे गतिविधि क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से आ जा सकें। इसके अतिरिक्त गतिविधि क्षेत्रों का विभाजन इस प्रकार किया गया हो ताकि एक क्षेत्र के बच्चे दूसरे क्षेत्र के बच्चों को विचलित न कर सकें। सुव्यवस्थित स्थान ऐच्छिक व्यवहारों को प्रोत्साहित करते हैं तथा बच्चों एवं कर्मचारियों के बीच सकारात्मक अन्तर्क्रिया में सहायक होता है। यह आवश्यक अधिगम सामग्री के समुचित व्यवस्थापन में भी सहायता करते हैं।

15.3.5 अधिगम सामग्री तथा उपकरणों का उपयोग एवं रखरखाव

यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि उपकरण का रखरखाव सही हो तथा उपकरण गतिविधियों में उपयोग हेतु सदैव तैयार हों। अधिगम सामग्री, उपकरण तथा कक्षा का नियमित निरीक्षण उपकरणों की दीर्घायु सुनिश्चित करने की दिशा में पहला कदम है। शिक्षक जटिल क्रियाविधि/संयोजन वाले उपकरणों के रखरखाव को लेकर निराश हो जाते हैं क्योंकि उनमें समय तथा ऊर्जा अधिक लगती है। कुछ ऐसी सरल रणनीतियाँ हैं जिनका लगातार अनुपालन करके रखरखाव को आसान बनाया जा सकता है तथा बच्चों में स्वामित्व एवं गर्व की भावना को बढ़ाया जा सकता है। ऐसी कुछ रणनीतियों की चर्चा नीचे की गई है–

- कीटाणुओं के फैलने से बचने के लिए सभी उपकरणों की झाड-पोंछ, साफ सफाई तथा कीटाणुरहित बनाना नियमित रूप से किया जाना चाहिए।
- धोये जाने वाले खिलौनों को धोया जाना चाहिए तथा कीटाणुओं द्वारा फैलने वाली बीमारियों से बचाव के लिए हर समय साफ रखना चाहिए।
- साफ-सफाई बनाये रखने के साथ-साथ उपयोग हेतु सामग्री की आसान पहुँच के लिए पर्याप्त भंडारण स्थान आवश्यक है। बच्चों के व्यक्तिगत सामान रखने हेतु भी स्थान की आवश्यकता है।
- सभी भंडारण अलमारियों को शब्दों तथा चित्रों से नामित किया जाना चाहिए। शुरुआत में नामित करने का काम मुश्किल होता है परन्तु एक बार इस कार्य के संपन्न होने के पश्चात शिक्षकों तथा बच्चों के लिए समुचित स्थान पर सामग्री को वापिस रखने में बहुत ही सहायक होता है। यह बच्चों में स्वतंत्रता तथा स्वामित्व को बढ़ावा देता है।
- छोटी वस्तुओं जैसे मोती, क्रेयान, चित्र कार्डों की आसान साफ-सफाई हेतु उन्हें नाम लिखें टब या टोकरी में व्यवस्थित करें।

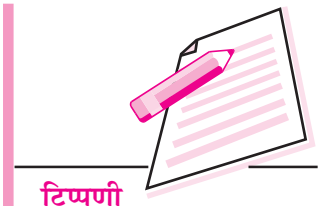

- सफाई की आवश्यकता वाले क्षेत्रों को उपलब्ध सफाई सामग्री के साथ जल के स्रोत के निकट रखने का प्रयास करें।
- जिन सामग्रियों का लंबे समय से उपयोग नहीं हुआ है उन्हें बारी-बारी से उपयोग में लिया जा सकता है तथा बच्चों की रुचि को बनाये रखने हेतु नयी सामग्री को भी शामिल किया जा सकता है।
- बिजली फिटिंग्स तथा ताप के सभी उपकरण बच्चों की पहुँच से दूर होने चाहिए। किसी भी दुर्घटना से बचने के लिए उनकी नियमित रूप से जाँच तथा मरम्मत होनी चाहिए।

ईसीसीई हेतु गणवत्तापूर्ण मानकों को भारत सरकार द्वारा 2013-14 में अनुमोदित किया गया है। आइए, इस दस्तावेज में उल्लेखित प्रावधानों का अध्ययन करें।

किसी भी ईसीसीई प्रावधान में हिस्सा लेने वाले सभी बच्चों के लिए नीचे दिये जा रहे सभी मानकों को अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

- ईसीसीई कार्यक्रम की अवधि 3 से 4 घंटे की होनी चहिए।
- 30 बच्चों के लिए 35 वर्ग मीटर का एक कक्षा-कक्ष तथा 30 बच्चों के समूह के 30 वर्गमीटर बाह्य स्थान उपलब्ध होना चाहिए।
- ढाँचागत रूप से भवन सुरक्षित तथा आसानी से पहुँच वाला हो। यह स्वच्छ तथा हरे-भरे वातावरण से आच्छादित होना चाहिए।
- स्वच्छ पेय जल उपलब्ध होना चाहिए।
- बालकों एवं बालिकाओं के लिए अलग-अलग शौचालय उपलब्ध हों।
- केन्द्र पर आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं के रूप में प्राथमिक सहायता/स्वास्थ्य किट उपलब्ध होनी चाहिए। इसका चैक लिस्ट के साथ नियमित रूप से मिलान किया जाना चाहिए तथा जो सामग्री उपयोग में ली जा चुकी हो उसे तुरन्त बदल जाना चाहिए। सामग्रियों की उपयोग की अवधि को समय-समय पर जाँचा जाना चाहिए।
- पर्याप्त प्रशिक्षित स्टाफ नियुक्त किया जाना चाहिए।
- विकास के लिए उपयुक्त तथा पर्याप्त अधिगम सामग्री एवं खिलौनों का प्रावधान होना चाहिए।
- बच्चों के सोने के लिए तथा भोजन पकाने एवं खाने हेतु स्थान आवंटित होना चाहिए।
- उसे 6 वर्ष तक के बच्चों के लिए वयस्क तथा बच्चों का अनुपात 1:20 होना चाहिए तथा 3 वर्ष से कम के बच्चों के लिए यह 1:10 होना चाहिए।

स्रोत: ईसीसीई के लिए गुणवत्ता मानक 2012, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

टिप्पणी

15.4 ईसीसीई कर्मियों की नियुक्ति

बच्चों को सीखने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने तथा सुविधा प्रदान करने हेतु सुप्रशिक्षित एवं योग्य ईसीसीई कर्मी आवश्यक है। गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा हेतु सुप्रशिक्षित तथा कुशल कर्मियों का चयन तथा नियुक्ति बहुत ही महत्वपूर्ण पहलु है।

इस खंड में आप विविध ईसीसीई कर्मियों तथा उनकी नियुक्ति प्रक्रिया के बारे में सीखेंगे।

15.4.1 ईसीसीई कर्मियों के प्रकार

आमतौर पर एक ईसीसीई केन्द्र का नेतृत्व, शिक्षकों और सहायकों के साथ उत्तरदायित्वों को साझा करते हुए केन्द्र प्रमुख करता है। आइए, उनके बारे में संक्षेप में अध्ययन करें।

ईसीसीई शिक्षक: ईसीसीई शिक्षक वह मुख्य व्यक्ति होता है जो कक्षायी वातावरण में गतिविधियों तथा कार्यक्रमों के संचालन हेतु उत्तरदायी होता है। एक कुशल तथा प्रतिबद्ध शिक्षक छोटे बच्चों के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक कुशल तथा प्रतिबद्ध शिक्षक छोटे बच्चों के जीवन में जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक शिक्षक को अच्छा सैद्धान्तिक ज्ञान होना चाहिए तथा उसे बच्चों से अन्तर्क्रिया करते समय व्यावहारिक तरीके से लागू करने में सक्षम होना चाहिए। एक शिक्षक में बच्चों की आवश्यकता तथा माँग के अनुरूप भूमिका, जैसे संवाददाता, सुविधादाता, कथावाचक, प्रेरणा स्रोत इत्यादि, निर्वहन करने की क्षमता होनी चाहिए। उसे सहज तथा बच्चों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

ईसीसीई सहायक: ईसीसीई सहायक शिक्षक के दिशा-निर्देशन में बच्चों को देखभाल तथा निगरानी करता है। ईसीसीई सहायक, शिक्षक की नियोजित विविध गतिविधियों में सहायता करता है। ईसीसीई सहायक, केन्द्र की व्यवस्था तथा शिक्षक के कार्यों के संचालन हेतु अमूल्य है।

केन्द्र के साफ, स्वच्छ तथा व्यवस्थित रखने के लिए कुछ अन्य सहायक कर्मियों जैसे सफाई कर्मचारी, चपरासी इत्यादि की भी आवश्यकता होती है।

15.4.2 कर्मियों की पर्याप्तता

छोटे बच्चों के साथ कार्य करने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा तथा समर्पण की आवश्यकता होती है। अत: ईसीसीई केन्द्र की शुरुआत करने से पहले वांछित बाल-शिक्षक अनुपात तय करने के लिए आवश्यक कर्मियों की संख्या का निर्धारण आवश्यक है। 10 से 15 बच्चों वाले कक्षा-कक्ष के लिए एक शिक्षक तथा एक सहायक नियुक्त होना चाहिए।

चित्र 15.8 : वांछित बाल-शिक्षक अनुपात

15.4.3 कर्मियों की निगरानी तथा पर्यवेक्षण

केन्द्र पर स्टाफ तथा संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन की सुनिश्चितता हेतु नियमित रूप से निगरानी तथा पर्यवेक्षण आवश्यक है। इसमें ईसीसीई कर्मियों, केन्द्र की दैनिक गतिविधियों तथा घटनाओं की निगरानी तथा पर्यवेक्षण हेतु ईसीसीई कर्मियों की उचित तैनाती शामिल है। यह कर्मियों के मूल्यांकन तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को पहचान करने में भी सहायता करता है।

पाठगत प्रश्न 15.6

1. खाली स्थान भरिए–

   (a) .....ईसीसीई केन्द्र परिसर को साफ तथा स्वच्छ रखता है।

   (b) एक ईसीसीई/प्री-स्कूल शिक्षक को बच्चों के साथ कार्य करने हेतु बहुत अधिक ..... तथा ..... होना चाहिए।

   (c) ..... और ..... के प्रभावी प्रबंधन के लिए नियमित निगरानी तथा पर्यवेक्षण आवश्यक है।

टिप्पणी

15.4.4 कर्मियों के चयन के लिए मानदण्ड

प्री-स्कूल के बच्चों के साथ करने के लिए कुछ निश्चित कौशल तथा दक्षताओं की आवश्यकता होती है। जैसे कि प्रारंभिक बाल्यावस्था बहुत ही महत्वपूर्ण अवस्था है, अत: हमें उसके अनुरूप कुशल एवं योग्य कर्मियों को नियुक्त करने की आवश्कत है। सरकार एवं संबंधित मंत्रालयों ने भी प्री-स्कूल शिक्षकों के लिए कुछ आवश्यक तथा महत्वपूर्ण कौशलों एवं येग्यताओं को निर्धारित किया है। इसलिए, ईसीसीई कर्मी को निर्धारित मानकों तथा योग्यताओं को पूरा करने के पश्चात ही नियुक्त किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है कि उन्होंने सक्षम अधिकारियों द्वारा विधिवत मान्यता प्राप्त संस्थानों/विश्वविद्यालयों/बोर्ड़ों से निर्धारित शिक्षा तथा प्रशिक्षण प्राप्त किया हो।

ईसीसीई शिक्षक स्थानीय समुदाय से ही कोई व्यक्ति होना चाहिए ताकि वह उस समुदाय के रीति-रिवाजों तथा सामाजिक मूल्यों से अवगत हो तथा उन्हें बच्चों में विकसित करने में सक्षम हो तथा बच्चों, माता-पिता तथा समुदाय की अपेक्षाओं को पूरा करने में भी सक्षम हो।

व्यावसायिक अनुभव: जो व्यक्ति प्रशिक्षित नहीं है उन्हें शुरुआत में आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता है तथा उनके लिए बार-बार प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है।

बाल्यावस्था विकास या ईसीसीई में एक या दो वर्ष के प्रशिक्षण डिग्री धारक होने के बावजूद भी बच्चों के साथ कार्य करने का अनुभव बिल्कुल ही अलग पहलु होता है। अत: वास्तविक अनुभव होना आवश्यक है। कोई भी व्यक्ति बच्चों के बारे में अध्ययन कर सकता है परन्तु बच्चों के साथ कार्य करना बिल्कुल ही नया अनुभव है। व्यावसायिक अनुभव के द्वारा, एक ईसीसीई शिक्षक, छोटे बच्चों के साथ प्रभावी रूप से कार्य करने के लिए आवश्यक अनुभव हासिल करता है।

एक शिक्षक/कर्मी को निश्चित रूप से ज्ञान होना चाहिए कि कैसे-

- बच्चों की जरूरतों और विकास की बेहतर समझ के आधार पर सीखने का अनुकूल वातावरण तैयार करके बाल विकास तथा सीखने को प्रोत्साहित करें।
- परिवार तथा समुदाय के साथ संबंध स्थापित करें जोकि बच्चों की शिक्षा में उनकी सहायता करे तथा भागीदार बने।
- व्यवस्थित रूप से बच्चों के विकास और सीखने पर संकारात्मक प्रभाव हेतु अवलोकन, प्रलेखन तथा मूल्यांकन को नियोजित करे।
- बच्चों तथा परिवारों के साथ संबंधों के ज्ञान को समेकित करके, प्रभावी शैक्षिक उपागमों का उपयोग करके, बच्चों के अधिगम से संबंधित प्रत्येक क्षेत्र में विषययुक्त के ज्ञान तथा विकास के लिये उपयुक्त पाठ्यक्रम की योजना तैयार करके लागू करना, इत्यादि के जरिए अधिगम तथा विकास को प्रोत्साहित करे।

सुखद व्यक्तित्व वाला ईसीसीई कर्मी बच्चों के साथ कार्य करने के लिए उपयुक्त है। उनमें

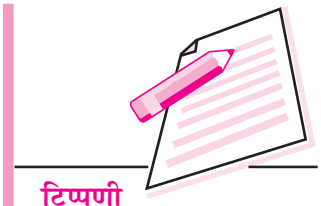

टिप्पणी

धैर्य, उत्तरदायित्व की समझ, उत्साह, सृजनात्मकता, संवेदनशीलता तथा सहजता आवश्यक है। स्टाफ बाल स्नेही होना चाहिए। यद्यपि केवल एक साक्षात्कार द्वारा किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आकलन संभव नहीं है, परन्तु इसके लिए व्यक्तिगत संदर्भों का उपयोग करने से काफी सहायता मिल सकती है। बच्चों के इर्द-गिर्द कार्य करने वाले सभी व्यक्तियों की पृष्ठभूमि की जांच आवश्यक है। पृष्ठभूमि की जाँच से यह सुनिश्चित होगा कि व्यक्ति का रिकॉर्ड साफ है तथा अतीत में वह किसी भी अपराध में शामिल नहीं रहा है।

एक स्वस्थ सुरक्षित तथा सफल ईसीसीई केन्द्र की योजना बनाने तथा रखरखाव हेतु ईसीसीई कर्मियों को काम पर रखना महत्वपूर्ण है।

15.5 ईसीसीई में भागीदार/हितधारक

हितधारक एक ऐसा समूह होता है जो किसी संगठन के कार्य तथा नीतियों को प्रभावित करता है। शिक्षा में हितधारक वह है जो एक स्कूल तथा स्कूल प्रणाली की सफलता में रूचि रखता है तथा उसके लिए विचार करता है। इसमें सरकारी अधिकारी, स्कूल बोर्ड के सदस्य प्रशासक तथा शिक्षक शामिल हो सकते हैं। माता-पिता बच्चे भी हितधारक हैं क्योंकि वे समुदाय का हिस्सा हैं। हितधारकों की सहभागिता बच्चों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

हितधारकों की चार श्रेणियाँ हैं। **उपयोगकर्ता;** जो उत्पादों का उपयोग करते हैं; **शासन के हितधारक;** जो शासन तथा प्रबंधन करते हैं **प्रभावित करने वाले;** यह वे हैं जो यह तय करते हैं कि क्या और कैसे किया जाना है, **प्रदाता;** ये वे लोग हैं जो परियोजना को संसाधन उपलब्ध कराते हैं। वे गुणवत्ता, देखभाल तथा सेवाओं में सहायता करते हैं। वे प्रचार, सलाह तथा वित्तपोषण प्रयासों को उपलब्ध कराते हैं। आइए, इन्हें संक्षिप्त रूप से समझते हैं–

1. उपयोगकर्ता

उपयोगकर्ता वह हैं जो किसी परियोजना या कार्यक्रम के उत्पादों का उपयोग करेंगे। वे उत्पादन के लाभार्थी हैं। उदाहरण के लिए, ईसीसीई कार्यक्रम में बच्चे तथा अभिभावक उपयोगकर्ता हैं।

2. शासन के हितधारक

लेखा परीक्षक, नियामक, स्वास्थ्य तथा सुरक्षा अधिकारी कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हें शासन हितधारकों के रूप में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। ये वे लोग हैं जिन्हें इस बात में रुचि होती है कि कार्यक्रम में चीजें किस प्रकार प्रबंधित की जाती हैं।

3. प्रभावित करने वाले हितधारक

सरकार के नियम, विनियम, नीतियाँ तथा समुदाय और परिवार की विशिष्ट जरूरतें सभी इस बात को प्रभावित करते हैं कि बच्चों के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। ये वे लोग हैं जिनमें किसी प्रीस्कूल द्वारा संचालित कार्यक्रमों में बदलाव की योग्यता होती हैं।

4. प्रदाता

यह स्पष्ट है कि यह केवल स्कूल ही है जो बच्चों के सीखने तथा विकास को बढ़ावा देने के लिए व्यवस्थित सुविधाएं प्रदान करता है। प्रदाताओं में प्रबंधन, कर्मी तथा बच्चों को लाभान्वित करने वाली सेवाओं में योगदान देने वाला कोई अन्य व्यक्ति शामिल होते हैं।

बच्चों के लिए समुदाय की समझ, अपनेपन और सुरक्षा की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। बहुत से परिवारों के लिए, प्रारंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रम घर के बाहर बच्चों के लिए समुदय के संपर्क करने का प्रथम अवसर प्रदान करती है। इसलिए ईसीसीई में समुदाय एक महत्वपूर्ण हितधारक है।

सभी ईसीसीई केन्द्रों को सुनिश्चित करना चाहिए तथा केन्द्र चलाने में हितधारकों की सहभागिता को बढ़ावा देने की योजना तैयार करनी चाहिए। उन्हें नियमित रूप से दिशा-निर्देश तैयार करने चाहिए जिनका सभी प्रदाताओं द्वारा पालन किया जाना चाहिए।

एक अच्छे ईसीसीई केन्द्र में शिक्षकों की कार्य योजना में माता-पिता के साथ कार्य करने का समय भी निर्धारित होता है। शिक्षकों को माता-पिता के साथ कार्य करने तथा सहयोग से काम करने की जरूरत की सराहना करने के लिए प्रशिक्षित होना चाहिए। माता-पिता को उनकी सहभागिता तथा योगदान के महत्व के बारे में सूचित करने की आवश्यकता है। शिक्षकों को माता-पिता को पाठ्यक्रम तथा वे इसमें किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं, के बारे में सूचित कर देना चहिए।

इसलिए बच्चों की प्रारंभिक अवस्था में उनकी शिक्षा के बाद के शिक्षा परिणामों पर पड़ने वाले प्रभावों के कारण हितधारकों की सहभागिता महत्वपूर्ण है।

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने सीखा कि–

- स्थान की पहचान

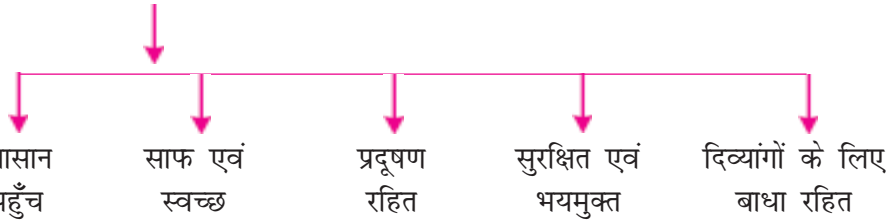

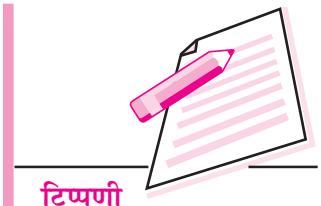

- संसाधन तथा भौतिक सुविधाएं

आन्तरिक

- आकार
- हवादार
- प्रकाश
- भण्डारण स्थान
- दीवार एवं छत
- शौचालय सुविधा

ब्राह्य

- आकार
- खेल का मैदान
- रेत के गढ्ढे
- घास से आच्छादित क्षेत्र
- रैम्प, चौड़े दरवाजे इत्यादि

- सुरक्षा एवं बचाव
  - गैर-विषैली सामग्री का उपयोग
  - फिसलन रहित फर्श
  - गोल किनारों वाला स्थिर फर्नीचर
  - गोल किनारों वाली दीवार
  - बिजली फिटिंग्स तथा प्लग प्वांइटस की सुरक्षित स्थिति
  - आपदा प्रबंधन के उपकरण तथा उनका उपयोग
  - चिकित्सीय आपात के प्रबंधन हेतु प्रशिक्षित व्यक्ति तथा प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करना

- अधिगम सामग्री तथा उपकरण
  - सामग्री तथा उपकरण का प्रकार
  - सामग्री तथा उपकरण का चयन
  - सामग्री तथा उपकरण की व्याख्या
  - सामग्री तथा उपकरणों का रखरखाव तथा उपयोग

- ईसीसीई कर्मियों के प्रकार
  - ईसीसीई शिक्षक/प्री स्कूल शिक्षक
  - ईसीसीई सहायक
  - सहायक कर्मी

- स्टॉफ की पर्याप्तता
- स्टॉफ की निगरानी तथा पर्यवेक्षण
- ईसीसीई स्टॉफ के चयन के मानदण्ड → शैक्षिक योग्यता, अनुभव, व्यक्तित्व
- ईसीसीई में हितधारक → उपयोगकर्ता, शासन के हितधारक, प्रभावित करने वाले, प्रदाता

पाठान्त प्रश्न

1. ईसीसीई केन्द्र के स्थान का चयन करते समय विचार किये जाने वाले कारकों की व्याख्या कीजिए।
2. बच्चे की शिक्षा और विकास में सहायता के लिए आन्तरिक स्थान के रखरखाव तथा उपयोग करने के कुछ तरीकों का वर्णन कीजिए।
3. ईसीसीई केन्द्र में आवश्यक बाह्य सुविधाओं पर चर्चा कीजिए तथा उनके रखरखाव तथा प्रभावी उपयोग कैसे किया जा सकता है?
4. ईसीसीई केन्द पर सामग्री और उपकरणों के चयन को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।
5. किसी ईसीसीई केन्द्र पर अधिगम सामग्री तथा उपकरणों की दृश्यता, पहुँच तथा उपयोग कैसे सुनिश्चित करेंगे?
6. ईसीसीई केन्द्र पर उपकरणों तथा सामग्रियों का समुचित स्थिति में रखरखाव के तरीकों का उल्लेख कीजिए।
7. ईसीसीई में विभिन्न हितधारकों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

15.1

(क) रैम्प तथा लचीला फर्नीचर

(ख) त्वचा रोग तथा कृमि संक्रमण

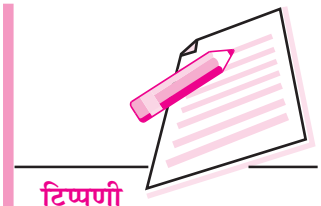

टिप्पणी

(ग) केन्द्र के पास रूका हुआ पानी, कूड़ादान

(घ) फिसलन रहित

(च) हवादार कमरे

15.2

(a) सत्य (b) असत्य (c) सत्य (d) सत्य (e) सत्य

15.3

(a) iv (b) v (c) ii (d) iii (e) i

15.4

1. (a) असत्य (b) सत्य (c) सत्य (d) असत्य

2. कम बजट पर सामग्री मुहैया कराने के दो तरीके हैं–

   (i) प्राकृतिक सामग्री जैसे पत्ती, टहनी इत्यादि का उपयोग।

   (ii) उपलब्ध संसाधनों का एकाधिक उपयोग।

3. इन्डोर सामग्री : फिट-इन-पहेलियाँ, गुडियाँ, कोलॉज सामग्री, जाइलोफोन, रेडियो और गुटखे

   आऊटडोर सामग्री : रेत के गढ़ढे, झूले, सवारी वाले खिलौने, जंगल जिम

15.5

1. (a) दृश्यता एवं पहुँच

   (b) श्यामपट्ट् तथा नीची अलमारियाँ

   (c) बागीचा क्षेत्र तथा रेत के गढ्ढे

   (d) शब्द तथा चित्र

15.6

1. (a) ईसीसीई सहायक

   (b) ऊर्जा तथा ध्यान

   (c) स्टाफ तथा संसाधनों

संदर्भ :

- Gupta, S. (2009). *Early Childhood Care and Education.* New Delhi: PHI Learning Pvt. Ltd.

टिप्पणी

- Hilderbrand, V. (1984). *Management of Child Development Centre*. New York: Collier MacMillan
- Sanwal, S. (2008). *A Study of Early Childhood Workforce and Early Childhood Environment in Bhopal and Indore Cities*. New Delhi: NCERT.
- Seth, K. (1996). *Minimum Specifications for Pre–schools.* New Delhi: NCERT.
- Shukla, R.P. (2004): *Early Childhood Care and Education.* Sarup & Sons.
- Sidhu, K .W. (1996). *School Orga nisation and Administration*. New Delhi: Sterling Publishers.